Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-2 | March-2015
Available online at www.lbp.world

गद्य विधाओं में पात्रों का चरित्र–चित्रण

विमल कुमार
बी0 ए0, एम0 ए0 (हिन्दी)
शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय, दरभंगा.

भूमिका–

साहित्य के गद्य विधाओं में पात्रों की योजना काफी पुरानी है। बिना पात्र का कथानक आगे बढ़ नहीं सकता। पात्र ही कथानक का कर्त्ता भोक्ता होता है। रेखाचित्रकारों ने भी अपने–अपने रेखाचित्रों में पात्रों क चरित्र–चित्रण किया है। यद्यपि रेखाचित्र के प्रादुर्भाव काल से लेकर आजतक कई रेखाचित्रकार उभर कर आये, लेकिन अनकी कृतियाँ वा तो सूचनात्मक हो कर गयी है, या कहीं–कहीं उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हैं, ऐसी स्थिति में रेखाचित्रों में पात्र योजना वैसे ही रेखाचित्रकारों के रेखाचित्रों में देखी जायेगी, जिनकी कृतियाँ समग्र रूप में सर्वसुलभ है और ऐसे रेखाचित्रकारों में मुख्यतः दो ही प्रमुखता से सामने आते हैं – महादेवी वर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी, अतः आधार रूप में इन्हीं के रेखाचित्रों में वर्णित पात्रों के चरित्रों का उद्घाटन अभिधेय है।

दो किनारों में आबद्ध महादेवी वर्मा की साहित्य सरिता अविरल गति से प्रवाहित है। अपनी एक गति औरी एक लय में। उसमें कहीं उफान नहीं, कहीं तूफान और हाहाकार नहीं। उसकी अतल गहराई में सिर्फ करूणा है और वेदना ही विद्यमान है। शांतभाव में लीन जीवन की सच्चाई को तलाषने की अनवरत साधना में वे चिर निमग्न बनी रही। इसी निमग्नता का प्रतिफल उनके रेखाचित्रों के पात्रों को प्रभावित किया है। रेखाचित्रों में वर्णित पात्र ऐतिहासिक पात्र न होकर भारतीय जनजीवन के कुरूप चिन्ह हैं, जिनमें से कुछ अषिक्षा और शोषण से दीन–हीन और सरल बन गए हैं तथा कुछ महादेवी की करूणा और ममता की सहानुभूति से निर्मित। वस्तुतः गीतिकाव्य में व्यक्तिप्रधान महादेवी की भावना रेखाचित्रों में आकर समाज प्रधान बन गई है। रेखाचित्रों में उनकी अनुभूति मात्र प्रणयिनी की अनुभूति नहीं है, उसमें माँ की ममता है, बहन का प्रेम है, और है नारी की कोमल काया के भीतर हृदय की अनुभूति की कोमल अभिव्यक्ति। जन–जीवन में व्याप्त दुख, दैन्य, अषिक्षा, उत्पीड़न, अभाव आदि के प्रति विराट सहानुभूति करूणा और ममता के साथ–साथ कहीं–कहीं विद्रोह भी है, जो करूणा और ममता से ही अभिभूत है, उनके रेखाचित्र जन–जीवन के प्रामाणिक दस्तावेज हैं।

'स्मृति की रेखाएँ' में पहला रेखाचित्र देहात की एक वृद्ध महिला का है, जिसका नाम भक्तिन है। वह अज्ञान और अषिक्षा के कारण अनेक दुर्गुणों का षिकार है, फिर भी उसमें कुछ ऐसे गुण हैं, जो उसके आकर्षक व्यक्तित्व का परिचय कराते हैं।

परिवारिक कारणों से वह महादेवी की शरण में आती है। वह पढ़ी–लिखी नहीं, लेकिन उसमें कर्त्तव्यनिष्ठा का बोध है। वह कहती है – ''हमारा मालकिन तौ रात–दिन कितबियन माँ गड़ी रहती है। अब हमहूँ पदै लागब तो घर–गिरिस्ती कउन देखी–सुनी।

भक्तिन किसी के भी दुःख को देखकर दुखी हो जाती है, लेकिन छात्रों के दुःख से और अधिक दुःखी हो जाती है। महादेवी लिखती हैं – विद्यार्थी वर्ग में से कोई जब कारागार का अतिथि हो जाता है, तब उस समाचार से व्यथित भक्तिन 'बीता–बीता' भीरे लड़कन का जेहल–कलयुग रहा तौन रहा अब परलय हो जाई – उनकर भाई का बड़े लाट तक लड़ै का चाही; कहकर दिनभर सब को परेषान करती रहती है। बापू से लेकर साधारण व्यक्ति सब के प्रति भक्तिन की सहानुभूति एक रस मिलती है।

यहाँ भक्तिन दुःखी तो होती है लेकिन बड़े लाट तक लड़ने की हिम्मत रखती है। लेखिका आगे लिखती हैं – ''किसी की माई यदि बड़े लाट तक नहीं लड़ी तो नहीं लड़ी, पर भक्तिन का तो बिना लड़े काम ही नहीं चल सकता है। भक्तिन का यही चरित्र उन्हें दूसरे से अलग करता है।

'चीनी फेरी वाला' का फेरीवाला अपना देष छोड़कर अपनी खोयी हुई बहन की तलाष में फेरी लगाता है बहन की हर इच्छा पूरी करने को तैयार रहता है। चीन के वस्त्र, चीन के चित्र आदि की रंगमयता देखकर भ्रम होने लगता है कि वहाँ की मिट्टी का हर कण भी इन्हीं रंगों से रंग हुआ न हो। चीन देखने की इच्छा प्रकट करते ही सिस्तर का वास्ते हम चलेगा।'' कहते–कहते चीनी की आँखों की नीली रेखा प्रसन्नता से उजली हो उठती थी। माँ के प्रति भी चीनी की श्रद्धा अटूट थी।

'जंग बहादुर' में पर्वतपुत्र, जंघिया, ठकुरी बाबा का ठकुरी बाबा, बिबिया की बिबिया और गुंगिया की गुंगिया आदि उपेक्षित एवं पीड़ित पात्रों का रेखांकन है।

'जंग बहादुर' एक विष्वास पात्र पहाड़ी नौकर है, जो सदैव अपने कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करता है। वह अपने मालकिन महादेवी के पीछे हो जाने पर उन्हें आगे चलने का जो ग्रिह है, उससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि, उनमें महादेवी के प्रति कितनी श्रद्धा है। वह कहता है, माँ आप आगे चलता तो अस्सा होता! हम पीछू देखता है, फिर आगे देखता है, बोझा से गर्दन नहीं घूमता। आगे रहेगा तो सिर ऊँचा करके देख लेगा – वह गया माँ, वह जाता है और हमारा पाँव जल्दी उठेगा।

जंग बहादुर अपने बल–बूते पर कुली का कार्य कर रहे अपने छोटे भाई धनिया जो बीमार पर जाता है रास्ते में, उसे नहीं छोड़ता। उसे डर है कि यदि भाई को छोड़ दूँ तो लोग क्या कहेगा। दूसरी इस बात का भय है कि भाई की मजदूरी छूट जायेगी।

जंग बहादुर अनेक बार अपत्तियों में पड़ चुका है। वह अधिक कमाने के चक्कर में दूर–दूर की यात्रा करता है। एक सीजन में कई यात्राएँ कर डालता है।

दरिद्रता और अभाव कभी–कभी आदमी को चिड़चिड़ा और रूखा बना देता है। उसके भीतर ही भीतर प्रतिषोध की भावना भी छिपी रहती है। इसी अभावग्रस्त जिन्दगी ने 'दुबरी' की बहु को कर्कष बना दिया है; वह हमेषा युद्ध के लिए तत्पर रहती है। महादेवी ने लिखा है – ''गोबर रूपी मेंहदी से नित्य रञ्जित हाथों की प्रत्येक ऊँगली युद्ध के अनेक रहस्यमय संकेत छिपाये रहती है।

'मन्नू की माई' पारिवारिक दायित्वों का बखूबी निर्वाह करती है। दमा से पीड़ित ससुर का भी वह पूरा ख्याल रखती है। बूढ़ा अपनी बहु के क्रिया–कलाप से खुष ही नहीं, गर्व करता है। उसके परिश्रम से अर्जित अन्न की रोटी खाता और खरहरी साढ़े तीन पाये की खटिया पर सगर्व आसीन होकर तम्बाकू पीता है। मनु की माई ब्राह्मण बधू होकर भी किसी भी तरह के परिश्रम के कार्य से गुरेज नहीं करती। दिनभर गंगा पर जाकर भूखे पेट मजदूरी करके भी अपने सामंती संस्कारों की रक्षा करके समाज में प्रतिष्ठित बनी रहने का मूल्य चुकाती रहती है।

'ठकुरी बाबा' दीन दुनिया के लिए नितांत सुधआ बने रहे हैं। कल्पवास करने के दौरान ठकुरी बाबू की भेंट लेखिका से होती है। लेखिका उनमें निवसित कवि, परोपकारी, भक्त सहृदय और जगत के प्रत्येक पदार्थ का सजीव मानने वाली विषेषताओं के साथ–साथ अटूट राग को भी उद्घाटित करती है। लेखिक लिखती है – ''मैंने उनसे अधिक सहृदय व्यक्ति कम देखे हैं। यदि वृद्ध यहाँ न होकर हमारे बीच में होता,

तो कैसा होता, यह प्रष्न भी मेरे मन में अनेक बार उठ चुका है। पर जीवन के अध्ययन वे मुझे बता दिया है कि इन दोनों समाजों का अन्तर मिटा सकना सहज नहीं है। उनका बाह्य जीवन दीन है और हमारा आंतरिक जीवन रिक्त।''

'ठकुरी बाबा' वाल्सल्य प्रेम से ओत प्रोत हैं। उसमें लेखिका के पुत्री जन्य स्नेह है। तभी तो वह लेखिका के लिए लड्डू, घी और आचार लाता है – ''बूढ़े बाबा मेरे लिए तिल का लड्डू, घी, आम की एक फाँक और दही लाये थे। अरूचि के कारण घी रहित और पथ्य के कारण मिर्च–आचार के बिना ही मैं खिचड़ी खाती हूँ, यह अनेकबार कहने पर भी वृद्ध ने माना नहीं और मेरी खिचड़ी पर दानेदार घी और थाली में एक ओर अचार रख दिया। दही का दोनाथाली से टिकाकर अनुनय के स्वर में कहा– तनक सा चीखौ तो बिटिया रानी ! का। पढ़े–लिखे मनई यहै खाय के जियत है।

बिबिया

'बिबिया– का मुख्य पात्र रजक पुत्री बिबिया है जिसके साथ अनेक समस्याएँ एक साथ संग्रहित हैं। समाज और व्यक्ति के बीच चलने वाली मान्यताओं औ मूल्यों का संघर्ष आदिम युग से होता आया है। बिबिया इसी संघर्ष की ज्वलित मषाल है जो बुझ सकती है लेकिन जबतक जलेगी तब तक प्रकाष को मंद नहीं होने देगी। बिबिया संघर्ष को उसकी भीषणतम स्थिति में स्वीकारती है, जहाँ सामान्य नारी प्रतिक्रिया करने का साहस जुटा नहीं सकती थी। महादेवी वर्मा ने बिबिया जैसे अमर पात्रों की रचना करके यह सिद्ध कर दिया है कि उनमें उच्च कोटि के नारी पात्रों को रखने की क्षमता है जो व्यक्ति और समाज की विषिष्टतम स्थितियों को समन्वित करके उनके सहकारी एवं संघर्षमय रूपों को उद्घाटित करने की शक्ति रखते हैं।

बाल विवाह का षिकार और फिर विधवा बनी बिबिया शहर में दूसरा विवाह रचाती है पर जुआरी पति ने जब उसे दाँव पर लगाया जब उसने विरोध का बिगुल फूंक दिया। परिणाम उसे मायके लौटना पड़ा। मायके में भी उसे ताना सुनना पड़ता और अंत में तीसरी शादी की। हम उम्र के सौतेले पुत्र ने बिबिया से जबर्दस्ती करना चाहा लेकिन वह विरोध करती है 'बिबिया लात–घूसे का उत्तर केवल चिमटे से देने की सामर्थ्य रखती थी। पर वह झनकु का इतना आदर करने लगी थी कि उसका हाथ उठ न सका। वही सौतेलापुत्र भीखन अंत में अपनी विमाता बिबिया से क्षमा मांगता है। बिबिया जो विद्रोह की कभी राख न होने वाली ज्वाला थी। संसार ने उसे अकारण अपमानित किया। ..... संघर्ष के लिए उसके सभी अस्त्र टूट चुके थे। मुर्च्छितावस्था में पहाड़ या अडिग साहसी भी कायरता की उपाधि बिना पाये हुए ही संघर्ष से हट सकता है।

बिबिया के चरित्र को लेखिका पहाड़ की चोटी पर ले जाती है। लेकिन जब चोटी थोड़ी दूर पर होती है, तब नीचे वापस आ जाती है, जिससे चोटी पर चलने वाली पर्वता रोही बालिका का साहस जबाव दे देता है। होता तो यह जब उसी बेलन से जुआरी पति को पीटते हुई दिखलाती है। हाँ सौतेला पुत्र भीखन को क्षमादान देना मातृ सुलभ स्नेह को प्रदर्षित अवष्य करता है, लेकिन उसे भी चक्की और बेलन लगना आवष्यक था। उस समय की बिबिया जैसे सषक्त पर समय से चूकने वाली नारी पात्र का ही प्रतिफलन है कि आज आसाराम जैसे व्यक्ति का समाज में पाँव फैल रहा है।

गुंगुगिया के रूप में एक सजीव मातृत्व ही सामने आता है जब उसका पालित पुत्र बाबाजी के साथ चला गया तब भी उसका मन उसके दोष को देखने की अपेक्षा उसकी दिन रात प्रतीक्षा करने लगा। वह एक अभिनव मनोदषा को पहुँच चुकी थी जिसमें दूसरे के दोष सामने आती ही नहीं। अपना भाव ही विविध रूपों में सामने आता है। वह नया खिलौना देखते ही खरीद लाती और लाल पिटारी में संभाल कर रख देती। नया कपड़ा देखने ही हुलासी के नाप का कुरता सिलवा देती और तह करके अपने काठ के कंदूक में धर देती हुलासी को अच्छी लगने वाली मिठाइयाँ देखते ही मोल लेती और सींके पर रख आती। कभी – की भी रात के सन्नाटे में द्वार खोलकर किसी के आने की आहट सुनाती।

'अतीत के चलचित्र' में भारतीय नारियों की घुटनभरी जिन्दगी की कहानी है। जिसके पात्र प्रायः नारियाँ ही है। कुछ स्केच के नायक पुरूष पात्र है, लेकिन इनके माध्यम से भी महादेवी नारी के कई रूपों का चित्र अंकित करती है।

'रामा' विमाता की कुदृष्टि का षिकार है। यह विमाता के अत्याचार से पीड़ित हो महादेवी के पास पहुँचता है। वह वहाँ नौकर बनकर रहने लगता है। अब रामा के बगैर लेखिका का काम नहीं चल सकता। महादेवी लिखती है। ''रामा के बिना भी संसार का काम चला सकता है, यह हम नहीं मान सकते थे। माँ तब दस–पन्द्रह दिन के लिए नानी को देखने जाती। तब रामा को घर और बाबूजी की देखभाल के लिए रहना पड़ता था। बिना रामा के हम जाने के लिए किसी प्रकार भी प्रस्तुत नहीं होते।

'बिन्दा' रेखाचित्र का मुख्य पात्र बिन्दा है। बिन्दा के माध्यम से लेखिका नारी यातना का एक दूसरा परिदृष्य खड़ी करती है। उसकी माँ उसके बचपन में ही मर चुकी हैं उसके पिता दूसरी पत्नी लाए हैं। तारों में अपनी माँ को खोजती खाजती बच्ची (बिन्दा) विमाता के अत्याचार से पीड़ित होकर स्वयं तारों में चली जाती है। बिन्दा की विमाता के न्याय विधान में बिन्दा के लिए न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार।

साबिया

'साबिया' की साबिया नारी की एक और व्यथा कथा कहती है। उसका पति उसे छोड़कर कहीं चला गया और वह अपनी अंधी सास और बच्ची को लेकर जीवन संघर्ष करती है। दोनों के योग क्षेम के लिए अपने को दिन–रात पीसती रहती है। एक दिन उसका पति उसकी सौतन लेकर आ पहुँचता है। त बवह सौतन को भी स्वीकार कर लेती है और फिर निकम्मे पति तथा सौतन का भी खुषी–खुषी बोझ उठा लेती है नारी यातना के साथ पत्नीत्व का जो आदर्ष जुड़ा हुआ है। वह उसे एक अजीब जिन्दगी जीने को विवष करता है। महादेवी ने साबिया के चरित्र के ऐसे उदात्त पक्ष के सम्बन्ध में लिखा है। साबिया की अकारण शालीनता पर मेरी ऐसी सकारण ममता उत्पन्न हो गयी थी कि उसका समय एक प्रकार से अच्छा ही कटने लगा। अंत में वह साबिया को पौराणिक नारी मानते हुए कहती है – ''मैं साबिया को उस पौराणिक नारीत्व के निकट पाती हूँ, जिसने जीवन की सीमा रेखा किसी अज्ञात लोक तक फैला दी थी। उसे यदि जीवन के लिए मृत्यु से लड़ना पड़ा तो यह न मरने के लिए जीवन से संघर्ष करती है।

'बिट्टो' की बिट्टो नारी की अथक कहानी सुनाती है। बेचारी बिट्टो का भविष्य पहले से अधिक अंधकारमय है। सौतेलापुत्र उसे देखना नहीं चाहता।

अलोपी, घीसू और बदलू आदि अनेक निम्त वर्गीय पात्र दलित जीवन की व्यथा कथा ही नहीं कहते मानवीय सौंदर्य की दीप्ति भी फैलाते हैं। वे अपनी मटमैली और अभिषप्त जिन्दगी के बीच मानवीय संवेदना और कर्त्तव्य निष्ठा की अद्भुत छवि विकिर्ण करते हैं। अलोपी अंधा है, पर माँ को वह काम करते देखना पसंद नहीं करता। उसे कचोट होती है कि वह बैठा है और उसकी माँ खटती है– ''माँ तरकारियाँ लेकर फेरी लगाती है, पर पुत्र को अच्छा नहीं लगता कि जबान आदमी बैठा रहे और बुढ़िया मर–मर कर कमावे। इसी से शाक तरकारियों के तत्ववेता ताऊ से यहाँ की चर्चा सुन वह काम की खोज में निकल पड़ा है।''

'पथ के साथी' नामक रेखाचित्र संग्रह में रवीन्द्रबाबू मैथिली शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, निराला, जयषंकर प्रसाद, सुमित्रा नंदन पंत, एवं सियारामषरन गुप्त के चरित्रों का रेखांकन है। रवीन्द्र बाबू के सम्बन्ध में महादेवी की जो धारणा है उसके सम्बन्ध में मक्खन लाल शर्मा ने लिखा है कि ''महादेवी मूलतः नारी है औ उनकी सम्पूर्ण संस्कारवत्ता उन्हें अपनी सीमाओं से ऊपर नहीं जाने देती। वे एक सीमित परिधि में रहकर ही संतुष्ट है। यही कारण है कि उनका बिम्ब रवीन्द्र बाबू के व्यक्तित्व के केवल उन्हीं अंषों को साकार कर सका जो उनकी कल्पना शीलता एवं राज रंजित भावना के आलम्बन बन पाए। वृहत्तर यथार्थ के साथ जोड़कर देखने का प्रयास नहीं हो पाया। यद्यपि रवीन्द्र बाबू के व्यक्तित्व में ऐसा कुछ पर्याप्त था जिसे प्रस्तुत कर उन्होंने भारतीय पौरूष को एक भिन्न प्रकार की चुनौती दी थी।

मैथिलीषरण गुप्त का चित्र अत्यन्त सामान्य है, क्योंकि लेखिक उन्हें सामान्यों के बीच प्रतिष्ठित करके निष्चिन्त हो जाना चाहती है।

गुप्त जी के बाह्य दर्षन में ऐसा कुछ नहीं है जो उन्हें असाधारण सिद्ध कर सके। अपने रूप और वेष दोनों में वे इतने अधिक राष्ट्रीय हैं कि भीड़ में मिल जाने पर शीघ्र ही खोज नहीं निकाले जा सकते।''

सुभद्रा कुमारी चौहान के चरित्रों में वात्सल्य की मार्मिक व्यंजना हुई है–

सुभद्रा में जो महिमामयी माँ थी उसकी वीरता का उत्स भी वात्सलय ही कहा जा सकता है। न उनका जीवन किसी क्षणिक उत्तेजना से संचालित हुआ न उसकी खोज भरी कविता वीर रस की घिसी–पिटी लीक पर चली। उनके जीवन में जो एक निरंतर निखरता हुआ कर्म का तारतम्य है, वह ऐसी अन्तरव्यापनी निष्ठा से जुड़ा हुआ है कि जो क्षणिक उत्तेजना का दान नहीं मानी जा सकती। इसी से जहाँ दूसरों को यात्रा का अंत दिखाई दिया वहीं उन्हें मंजिल का बोध हुआ।''

'निराला जी की 'अतिथि सेवा' उदारता, दानषीलता अस्त–व्यस्तता, सहदयता, निष्छलता एवं उदात्त प्रकृति के साथ दर्प स्वाभिमान कुत्सित पर व्यंग्य तथा आवष्यकतानुसार आक्रोष आदि की द्वन्द्वमयी स्थितियों का चित्रण हुआ है। ''उनकी दष्टि में दर्प और विष्वास की धूप छाँही द्वाभा है। इस दर्प का सम्बन्ध किसी हल्की मनोवृत्ति से नहीं और न उसे अहं का सस्ता प्रदर्षक ही कहा जा सकता है। अविराम संघर्ष और निरंतर विरोध का सामना करने से उनमें जो एक आत्मनिष्ठा उत्पन्न हो गई है, उसी का परिचय हम उनकी दृप्त–दृष्टि में पाते है।'

प्रसाद के जिन रूपों का महादेवी वर्मा ने रेखाचित्र में वर्णन किया है वे सहज मानवीय भावना से ओत–प्रोत हैं, उनमें आत्मीयता भी है, लेकिन गहराई जान पड़े और न उतने पुष्ट ही'' न अधिक ऊँचा न नाटा– मझोला कद न दुर्बल न स्थूल, छरहरा शरीर, गौर वर्णन माथा ऊँचा और प्रषस्त बाल।'

सुमित्रा नंदन नंत नामक रेखा चित्र में लेखिका ने पंत के स्वभाव, शरीर की कोमलता जीवन में आने वाले अनेक उतार–चढ़ाव, अन्तर्मुखी वृत्तियों वाले संकोची स्वभाव तथा पारिवारिक स्थितियों के जो विविध चित्र दिये हैं वे अपनी विषालता तथा गहराई में संवेदनरषील बन गए हैं।

'सियाराम शरण गुप्त' राग–विराग से परे हैं। लेखिका लिखती है ''पानी पर तेल की बूंद की तरह तैरता, उतरता फिरे ऐसा न राग उसके पास हैं न वैराग्य, न ज्ञान है न अहंकार।''

निष्कर्ष–

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि महादेवी के रेखाचित्रों के सभी पात्र अभिजात वर्गी नहीं है, समाज द्वारा तिरस्कृत हैं, फिर भी उनमें जीने की जिजीविषा है। वे समाज में परिवर्तन के आकांक्षी नहीं, उसी में जीना चाहते हैं। समाज द्वारा अच्छे बुरे मिले प्रमाण पत्रों के खोखलेपन को पहचानती हुई भी वे (नारी पात्र) उन्हीं प्रमाण पत्रों की तलाष में भटकती रहती हैं। हाँ कभी–कभी वह जीविका के साधन सिखाने के लिए आश्रम की तलाष अवष्य करती हैं, चक्की और बेलन से मारने का सामर्थ्य रखकर भी पुरूष प्रधान गलित समाज पर हाथ नहीं उठाती है। उसे प्रत्योक पग पर प्रत्येक सांस के साथ पुरूष से सहायता की भिक्षा मांगते हुए आगे चलना पड़ता है।

संदर्भ सूची–

1. आजकल, मार्च–2007, पृ0–93
2. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, पृ0–15
3. वही, पृ0–19
4. वही, पृ0–19–20
5. वही, पृ0–23
6. वही, पृ0–37
7. वही, पृ0–42

8. वही, पृ0–48
9. वही, पृ0–67–68
10. वही, पृ0–67
11. डॉ0 मक्खन लाल शर्मा – हिन्दी रेखाचित्र – सिद्धान्त और विकास, पृ0–251
12. स्मृति की रेखाएँ, पृ0–97
13. वही, पृ0–98
14. स्मृति की रेखाएँ – पृ0–112
15. म्हादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, पृ0–19
16. वही, पृ0–35
17. वही, पृ0–40
18. वही, पृ0–43
19. वही, पृ0–73
20. डॉ0 मक्खन लाल शर्मा, हिन्दी रेखा चित्र : सिद्धान्त और विकासए पृ0–258
21. महादेवी वर्मा, पथ के साथी, पृ0–34
22. वही, पृ0–59
23. वही, पृ0–77
24. वही, पृ0–91
25. वही, पृ0–122
26. बनारसी दास चतुर्वेदी – रेखाचित्र, पृ0–15